# श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108

श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि०)

कृति : श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी
चौधहवाँ संस्करण : 2100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2025
न्यौछावर राशि : 20.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

पुण्यार्जक परिवार : ईश्वर-संतोष सोनी (माता-पिता) की 41 वीं विवाह वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सादर प्रकाशनार्थः- विपुल-प्रियंका, गुंजन (पुत्र-पुत्रवधु), विहान एवं विराज (प्रपौत्र) सोनी परिवार (राजमहल वाले) 4-J-14, महावीर नगर-III, कोटा मो. 9352602892

**प्राप्ति स्थान :**

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

**मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047**

# प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

**बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)**

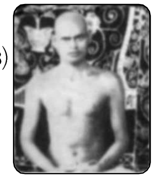

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

**परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज**

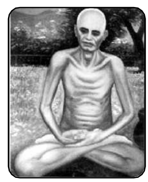

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

**परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)**

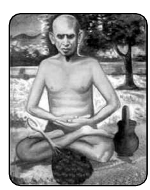

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

**परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)**

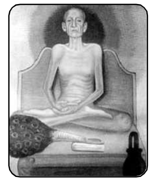

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

**मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज**

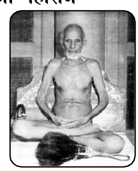

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

**परम पूज्य पंचम सिंहरथ प्रवर्त्तक पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज**

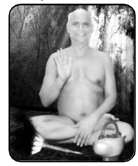

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर

**परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज**

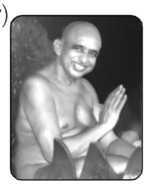

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

**गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी**

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
5 वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी महाराज
2 वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

**लेखिका की कलम से....**

# जन्म पत्री एक नक्शा

**आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण**

गगन में ज्योतिर्मान सूर्य चंद्र आदि की किरणों से प्रभावित मनुष्य नवग्रहों की मान्यता रखता है। ग्रहों के प्रभाव को ही सब कुछ मान बैठता है, और सारा दोष ग्रहों को ही देता है। जबकि कोई भी ग्रह ना तो अच्छा है और ना ही बुरा है। ज्योतिष मात्र एक नक्शे के समान है। जैसे कोई व्यक्ति कहीं लम्बे सफर की पद यात्रा करना चाहता है तो नक्शा साथ रखता है और बीच-बीच में देखता जाता है कि अब रास्ते में पहाड़ी आयेगी, अब खाई होगी, कहीं ढलान होगी, कहीं चढ़ाव होगा, कहीं फिसलन है तो सम्भल कर चलना है, कहीं कांटो भरा रास्ता है तो कहीं फूलों के बगीचे। इस नक्शे ने रास्ते का सारा ज्ञान करा दिया। व्यक्ति अब उसके आधर पर कठिन रास्ते में संभलकर चलेगा, कष्ट विपत्ति आने पर संतोष रखेगा कि ऐसा ही होना है। अतः दोष रास्ते का नहीं है वे तो जैसे थे वैसे ही हैं, यदि यात्रा करनी है तो इन राहों से गुजरना पड़ेगा और मंजिल तक पहुंचने के लिये उन रास्तों में चलना ही पड़ेगा चाहे अच्छा लगे या बुरा, लेकिन पुरुषार्थ से रास्ते के कांटे हटाये भी जा सकते हैं।

ठीक इसी तरह ज्योतिष हमारे भविष्य की यात्रा का नक्शा है जो जीवन की ऊँचाई निचाई और सुख-दुख के विषय का ज्ञान कराता है। ग्रह हमारे कर्मों के फल का ज्ञान कराते हैं कि तुम्हारे कर्मों के अनुसार ग्रह परिवर्तन है। ग्रह तो ग्रह है मूल तो हमारे कर्म हैं जो हमारे खुद के द्वारा ही बांधे हुये हैं। जब टंकी में पानी नही होगा तो नल में कैसे आयेगा। ग्रहों के नाम के द्वारा हम यह जान रहे हैं कि हमारे इन कर्मों का उदय होने वाला है। अब स्वास्थ्य खराब होगा, यानि शारीरिक कष्ट, अब परिवार में क्लेश होगा यानि मानसिक कष्ट, अब शनि की दशा है यानि संपत्ति का दूर होना।

यदि ये ग्रह ही सब कुछ हैं तो भगवान महावीर की वाणी से निष्सृत कर्म सिद्धांत कहां लागू होगा। सभी ग्रहों की किरणें प्रतिक्षण निकलती हैं पर सब पर असर क्यों नहीं होता? जैसे एक क्लास में 60 विद्यार्थी पढ़ते हैं। एक टीचर उन्हें पढ़ा रहा है। उन्हीं में से एक विद्यार्थी के 90% अंक आयें, दूसरे के 60-70-80% आदि-आदि और कई फेल हुये। कारण क्या है? मुख्य कारण है ज्ञानावरणी कर्म। और इसे ठीक करने का उपाय जिनवाणी सेवा, ज्ञान दान दूसरों की प्रसन्नता आदि-आदि। किन्तु ज्योतिषी को जन्म पत्री दिखाओगे तो वह इस पर ग्रहों का असर ही बतायेगा। अतः अपने श्रद्धान को मजबूत बनाना चाहिये कि जन्मपत्री हमारे कर्मों के फल का एक नक्शा है। जिसके अनुसार हमें जीवन में संभलकर चलना आवश्यक है। लापरवाही करने पर तो अच्छा भी बुरा हो जाता है

शनि ग्रह से लोग बहुत भयभीत रहते हैं। शनि से बचने के लिये लोग उसकी आराधना और पूजा करते हैं। पहले शनि मंदिर नहीं थे, किन्तु आजकल तो उन मंदिरों की बाढ़ सी आ गयी है। शनि का नाम सुनते ही लोगों का मन परेशान हो जाता है। विदेशों में देवी देवता या शनि मंदिर नही हैं, तो क्या वहां पैसा नहीं है? हर ग्रह की दो दृष्टि होती हैं, शुभ दृष्टि, अशुभ दृष्टि। शनि भी दो नेत्र वाला है। शनि की मुख्य भूमिका परिग्रह से दूर हटाने की है। शनि यदि अपना असर दिखाये तो इंसान दीक्षा भी ले लेता है। पूजा पाठ करवाता है। भगवान के प्रति श्रद्धान में दृढ़ता पैदा करता है और इंसान को धार्मिक बनाता है। फिर भी लोग शनि को बुरा कहते हैं। जबकि मेरी दृष्टि में शनि से अच्छा कोई ग्रह नहीं है। जो हमें कल्याण मार्ग की तरफ प्रेरित करता है संसार से वैराग्य दिलाता है और अच्छे बुरे की पहचान कराता है।।

**बनी पर देखिये, लाखों निसार होते हैं।**
**बनी बिगड़ती है तो, दुश्मन हजार होते हैं।।**

किसी व्यक्ति ने ज्योतिषी को जन्म पत्री दिखाई, पता चला शनि की दशा है तो ज्योतिषी बोला-रु. 1100 दे मैं शनि दूर कर दूंगा, वह बोला-

मेरे पास नहीं हैं। बोला, चल रु. 501 दे दे, बोला वह भी नही हैं। ज्योतिषी बोला चल रु. 101 दे दे, वह बोला वह भी नही हैं, बोला-चल, सवा रुपया ही दे दे, बोला वो भी नहीं है, तो ज्योतिषी बोला चल भग जा, शनि तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अर्थात् जो संसार में आकर संसार की वस्तु इकट्ठी करता है शनि का असर उस पर पड़ता है तुम्हारे पर नहीं। तुमने उन वस्तुओं को अपना माना है इसीलिये तुम दुखी होते हो। वैसे दुख का कारण स्वयं नहीं पर वस्तु हैं।

**सुख-दुख दाता कोई न आन।**
**मोह राग ही दुःख की खान।।**

यदि आप परमात्मा की अथवा देवी-देवताओं की पूजा जाप भक्ति अपने लालच और स्वार्थ में कर रहे हैं तो आप धर्म नहीं बल्कि सौदा कर रहे हैं। धर्म तो आत्मा का आराधक और उपासक करता है जो कर्म नाश और आत्म कल्याण हेतु करता है, उसे बाहर की वस्तु से ज्यादा स्वयं की आत्मा की चाह होती है। वह बाहर के संसारी सुख नहीं बल्कि आत्मा का सच्चा सुख प्राप्त करना चाहता है। कर्मों के नाश से बाहर के सुख तो स्वयंमेव प्राप्त होते हैं उन्हें भिखारी बनकर मांगने की जरुरत नहीं होनी चाहिए। अपने पुरुषार्थ पर भरोसा होना चाहिए, फिर भी काम न बने तो पूर्व कर्मों का फल समझकर समता रखनी चाहिये।

**भाग्य से ज्यादा समय से पहले,**
**ना किसी को मिला है ना मिलेगा।।**

एक व्यक्ति के पेट में दर्द हुआ, वह डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने बताया कि आपने खाने में प्रतिकूल वस्तु खाई है, अतः दवाई खाओ ठीक हो जाओगे। वही व्यक्ति एक ज्योतिषी के पास गया, जन्म पत्री दिखाई, वह बोला तुम्हारे राहु की महादशा चल रही है इससे तुम्हारे पेट में दर्द हुआ, उपाय करो ठीक हो जाओगे। वही व्यक्ति एक संत के पास गया, दर्द बताया तो वह बोले बेटे तुम्हारे असाता वेदनीय कर्म का उदय चल रहा है तुम प्रभु का नाम लो, पूजा पाठ करो, तो असाता कर्म का नाश और साता का उदय होगा।

बीमारी एक है, उपाय अलग-अलग हैं किन्तु मूल कारण है कर्म का उदय। जब तक हमारे पास कर्म हैं बाहर की सभी वस्तु हमें प्रभावित करेंगी किन्तु कर्मों का नाश होते ही कुछ असर नहीं करेगा। हमारे परमात्मा को कोई ग्रह परेशान नहीं करता, क्योंकि परमात्मा ने अंतरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के परिग्रह का त्याग किया है। शनि ग्रह का प्रभाव परिग्रह के ऊपर होता है अतः जब है ही नहीं तो कौन परेशान कर सकता है ? त्याग करने पर ही शांति पाई जा सकती है वरना पड़ौसी भी शनि बनकर परेशान कर सकता है ।

पशु पक्षी की कोई जन्म पत्री नही बनाई जाती। अतः प्रभु की भक्ति आत्मा का ध्यान और आत्मोत्थान की राह पर चलते रहो सुख-दुख को धूप और छाया के समान समझकर ग्रहण करते रहो, उससे भागने का प्रयास न करो, उससे परेशान मत होओ, हर स्थिति का सामना समता और धैर्य से करो, तो जीवन में शांति होगी। सोचो क्या साथ लाये थे और क्या ले जायेंगे, यहीं आकर इकट्ठा किया है यहीं छोड़ जायेंगे। बस जीवन यापन
हेतु दवाई के समान धन जरुरी है।

**जो मिला वो किसी से कम नहीं।**
**जो नहीं मिला उसका गम नहीं।।**

जब भी आप पर आपत्ति विपत्ति हो आप मुनि सुव्रतनाथ भगवान की पूजा विधान भक्ति पूर्वक करें। निश्चित संकट दूर होगें। पाप का क्षय पुण्य की वृद्धि होगी। शनि ग्रह भी अपनी काली छाया लेकर भाग जायेगा और सुख का उजाला होगा। भगवान महावीर के स्याद्वाद धर्म की अपेक्षा से ग्रहों की स्थिति कर्मों के अनुसार सक्रिय हैं इसे प्रभु भक्ति करके दोषों को निष्क्रिय करें।

# तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

**-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत**

**( अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद् )**

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है।

आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंतःकरण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में निःस्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

# श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
# माण्डला

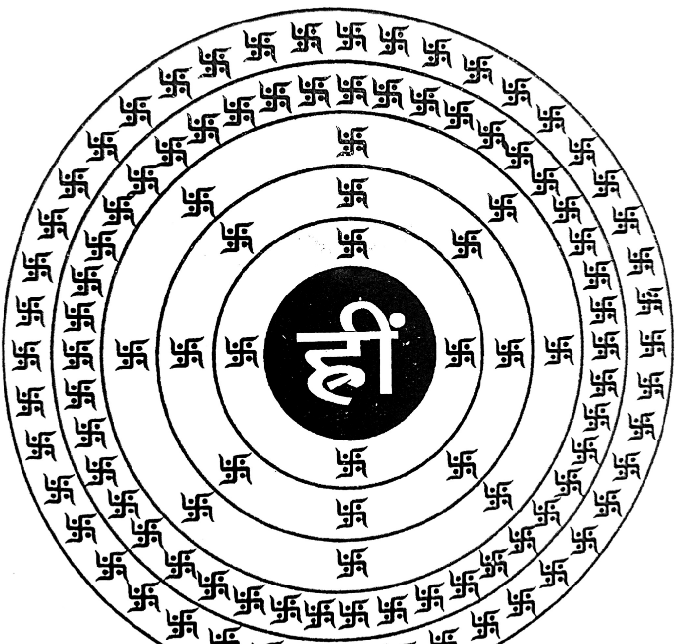

# विनय पाठ

विनय पाठ पढ़कर करूँ, पूजा का आरंभ।
पंच परम परमेष्ठी को, वंदन का प्रारम्भ।।1।।
चार कर्म को नष्ट कर, बने आप अरिहंत।
संकट हर मंगल करो, मिले मुक्ति का पंथ।।2।।
सिद्ध शुद्ध परमात्मा, सिद्धालय में वास।
कार्य सिद्ध होवें मेरे, यही प्रभू से आस।।3।।
आचारज उवज्झाय गुरु, सर्व साधु मुनिराज।
ज्ञान ध्यान तप में रहें, नमता सकल समाज।।4।।
चौबीसो जिनराज के, चरण कमल को ध्यायें।
जिनवाणी वरदान दे, शत्-शत शीश झुकायें।।5।।
मंगल मय जिन धर्म है, मंगल मय जिन ज्ञान।
मंगल सम्यग्दर्श को, बारम्बार प्रणाम।।6।।
सौ इन्द्रों से पूज्य हो, तीन लोक के नाथ।
कर्म बंध काटो प्रभू, दे दो अपना साथ।।7।।
जगत सिन्धु में डूबते, दे दो सहारा नाथ।
मात पिता बंधु तुम्हीं, तुम्ही हमारे भ्रात।।8।।
पद पंकज जो पूजता, सकल विघ्न नश जाय।
सच्ची भक्ति कर रहे, सच्चा पथ मिल जाय।।9।।
चिंता तज चिंतन तेरा, करने आया द्वार।
गुण गाकर भक्ति करूँ, दो मुझको आधार।।10।।
स्वारथ के संसार में, मैं हूँ अकेला देव।
छोड़ जगत अब आ गया, करूँ आपकी सेव।।11।।
गणधर ने गुण गाये थे, पूरे कह ना पाये।
मैं अज्ञानी क्या कहूँ, चरणन शीश झुकाये।।12।।
दया दृष्टि मुझ पर करो, दुखिया पर हे नाथ।
नहीं घटेगा आपका, मुझे मिले सुख पाथ।।13।।

व्यथा कहूँ किससे प्रभो, कोई न रिश्तेदार।
लगन लगी अब आपमें, दो जीवन का सार।। 14।।
गतियों में मैं घूमता, किया न कुछ भी काम।
जय जिनवर जिनदेव जी, मिला आपका धाम।।15।।
वीतराग प्रभु मिल गये, छोड़े रागी देव।
वीतरागता पाऊँगा, करूँ आत्म की सेव।।16।।
आकुलता अब छोड़ दी, समता रस परिणाम।
'स्वस्ति' बस वंदन करे, मिले मोक्ष का धाम।।17।।

# पूजा प्रारम्भ

**ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।**
**णमो अरिहंताणं,णमो सिद्धाणं,णमो आइरियाणं,**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।**
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
**चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्धा मंगलं,**
**साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं,**
**चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्धलोगुत्तमा,**
**साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।**
**चत्तारि शरणं पव्वज्झामि, अरिहंते शरणं पव्वज्झामि,**
**सिद्धे शरणं पव्वज्झामि, साहू शरणं पव्वज्झामि,**
**केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्झामि।**
ॐ नमोअर्हते स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

# मंगल विधान

## दोहा

हो अपवित्र तन तो यदि, या करते कोई काम।
परमेष्ठी के ध्यान से, होवे पाप की हान।।1।।

**अपराजित यह मंत्र तो, करे विघ्न का नाश।**
**सब मंगल में प्रथम है, देवे मुक्ति वास।।2।।**
**अर्हं शब्द को नमन है, परमेष्ठी का ध्यान।**
**सिद्ध चक्र का बीज है, बारम्बार प्रणाम।।3।।**
**विघ्न प्रलय सब शान्त हो, भूत प्रेत भग जायें।**
**विष निर्विष होवे तुरत, जो पूजा को गायें।।4।।**

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

**जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।**
**शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, कल्याण को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।**

ॐ ह्रीं श्री भगवतोगर्भजन्मतपज्ञान निर्वाण पंच-कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

**जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।**
**शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, परमेष्ठी को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।**

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।**
**शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, जिननाम को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।**

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहत्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

**जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ।**
**शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, जिनसूत्र को अर्घ्य चढ़ाता हूँ।।**

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

# स्वस्ति पाठ

## चौपाई

**श्री जिनेन्द्र की करें वंदना, तीन लोक के ईश हैं झुकना।**
**स्याद्वाद जिन धर्म के नायक, हो कल्याण तुम्हीं सब लायक।।1।।**

हो त्रिलोकगुरु जिनपुंगव हो, महिमाशाली निज स्थित हो।
आत्मज्योति अद्भुत प्रसन्न हो, हो कल्याण मैं भी धन्य हूँ।।2।।

विमल हो निर्मल ज्ञानी अमृत, पर भावों को करते विस्मृत।
सब वस्तु के आप हो ज्ञायक, हो कल्याण आप हो नायक।।3।।

द्रव्य शुद्धि भावों की शुद्धि, अवलंबन पूजा की वृद्धी।
यह शुभ यज्ञ करूँ मैं प्रारंभ, हो कल्याण सुखों का आरंभ।।4।।

महापुरुष पावन की गुरुता, मैं अल्पज्ञ हूँ मेरी लघुता।
मन में केवल ज्योति जगाऊँ, शुभ भावों से शीश झुकाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

# स्वस्ति मंगल

ऋषभ अजित संभव जिन स्वस्ति, अभिनंदन स्वस्ति-स्वस्ति।
सुमति पदम सुपारस जिनवर, चन्द्रप्रभू स्वस्ति-स्वस्ति।।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य स्वस्ति-स्वस्ति।
विमल अनंत धर्म शांति जिन, कुंथु अरह स्वस्ति-स्वस्ति।।
मल्लि मुनि नमि नेमि पार्श्व जिन, महावीरा स्वस्ति-स्वस्ति।
स्वस्ति-स्वस्ति चिंतन में हो, निशदिन हो स्वस्ति-स्वस्ति।।

इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

# परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

## शंभू छंद (तर्ज : भला किसी का...)

केवल ज्ञान मनः पर्यय औ, अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धि।
कोष्ठ बीज संभिन्न श्रोतृपद, दूर स्पर्श श्रवण ऋद्धि।।
दूरास्वादन घ्राण विलोकन, प्रज्ञा प्रत्येक पूर्वी ऋद्धि।
चतुर्दश पूर्वी प्रवादि अष्टांग, जंघा वन्हि श्रेणी ऋद्धि।।1।।

फल जल तंतु पुष्प बीजांकुर, गगन गमन धारी ऋद्धि।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, मन वच काया है ऋद्धि।।

**काम रूप वशित्व ईशत्व है, है प्राकाम्य अंतर ऋद्धि।**
**आप्ति प्रतिघात दीप्त तप्त तप, महाउग्र तप घोर ऋद्धि।।2।।**

**घोर पराक्रम परम घोर तप, ब्रह्मचर्य आमर्ष ऋद्धि।**
**सर्वौषध आशीर्विष दृष्टि, दृष्टि अविष है क्ष्वेल ऋद्धि।।**
**विडौषध जल मल क्षीरस्त्रावी, घृतमधु अमृत है ऋद्धि।**
**है अक्षीण संवास महानस, होती है शुभ ये ऋद्धि।।3।।**

**मुनिवर जब तप करते रहते, ये तो स्वयं ही आती हैं।**
**चमत्कार नहिं अतिशय है ये, भक्त के मन को भाती हैं।।**
**ऐसे परम ऋषिवर मेरे, हम सब का कल्याण करें।**
**संकट दुख पीड़ायें हर कर, कर्म हमारे शीघ्र हरें।।4।।**

**ऋद्धि सिद्धि के स्वामी ऋषिवर, ऋद्धि सिद्धि भंडार भरें।**
**ऋषिवर चरणों नमन करें हम, सुख अमृत के पुष्प झरें।।**

।। इति परमर्षि स्वस्ति मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

# महा समुच्चय पूजन

## चौपाई

**अरिहंत सिद्धाचार्य नमन कर, पाठक साधु को शीश झुकाकर।**
**णमोकार को मन से जपता, सारे पाप शमन मैं करता।।**
**सामायिक नित आत्म को ध्याकर, पूजा का शुभ भाव बनाकर।**
**अष्ट द्रव्य मैं लेकर आया, तेरी पूजा कर हर्षाया।।**
**सहस्त्रनाम को पढ़ हर्षाऊँ, नित आगम का ध्यान मैं ध्याऊँ।**
**ऐसी शक्ति हृदय में देना, अपने चरणों में रख लेना।।**

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहतौ भव भव वषट् संन्निधिकरणं।

## चाल छंद ''तुम सम्मेद शिखर को जइयो''

**शुभ भावों का जल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।**
**कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्श को जाऊँ।।**
**सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।**
**दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।**
**दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।**
**नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंदन वंदन को लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ भवाताप का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।**
**कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्श को जाऊँ।।**
**सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।**
**दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।**
**दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।**
**नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

**शुभ अक्षत धोकर लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ क्षण क्षण कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर.........**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि0 स्वाहा।

**पुष्पों का हार सजाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ कामबाण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर.......**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि0 स्वाहा।

**व्यंजन का थाल मैं लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ क्षुधाव्याधि का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर.......**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि0 स्वाहा।

**शुभ दीपक लेकर आऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ मोह अंध का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर.......**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि0 स्वाहा।

**वन्हि में धूप जराऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ दुष्ट कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर.......**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि0 स्वाहा।

**मैं सरस सभी फल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ अशुभ भाव का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर......**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि0 स्वाहा।

**अर्घ्यों की माला लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।**
**करूँ चिन्ता द्वेष का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।**
**तीसों चौबीसी ध्याकर.........**

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि0 स्वाहा।

## जयमाला

### त्रिभंगी छंद

**प्रभु ध्यान लगा के, भावना भा के, मंगलमय जीवन करता।**
**हो चरण में वंदन, जीवन चंदन, भक्ति से मैं भव तरता।।**

## शंभू छंद (तर्ज : भला किसी का...)

अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरू का, हम नित वंदन करते हैं।
उपाध्याय और सर्व साधु का, ध्यान हृदय में धरते हैं।।
देव हो सच्चा शास्त्र हो सच्चा, सच्चे गुरु को ध्याऊँगा।
भरत ऐरावत ढाई द्वीप, तीसों चौबीसी ध्याऊँगा।।1।।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, दर्शन की आशा करता।
होगा जब प्रत्यक्ष दर्श तो, हिय भी हर्ष तभी धरता।।
तीर्थंकर की वाणी ही, जिनवाणी जन कल्याण करे।
भव से पार करा दे उसको, जो इस पर श्रद्धान करे।।2।।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक के, जिन गृह को वंदन करता।
सिद्धालय के सिद्धों को ध्या, उन सम बनूँ आशा करता।।
पाँच मेरु के जिन बिम्बों को, करूँ मैं शत-शत बार नमन्।
नंदीश्वर के बावन जिन ध्या, पाप कर्म का करूँ शमन।।3।।
सोलह कारण भाव हैं सुन्दर, पद तीर्थंकर का देते।
दशलक्षण को धारण करके, मुक्ति सुन्दरी वर लेते।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का, आराधन हम करते हैं।
हो जाये यदि एक बार तो, चतुर्गति को हरते हैं।।4।।
ऋषभ आदि श्री वीर जिनंदा, भावों से पूजन करता।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, से ही मानव सुख वरता।।
गौतम गणधर सप्त ऋषि, आदि का ध्यान लगाऊँगा।
विघ्नों का होगा विनाश, औ ऋद्धि सिद्धि को पाऊँगा।।5।।
राम हनु भरतेश बाहुबलि, के पुरुषारथ याद करूँ।
पंच बालयति तीर्थंकर ध्या, मुक्तिपुरी को शीघ्र वरूँ।।
समवशरण में मानस्तम्भ है, सहस्र कूट जिन को वंदूँ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पा, कल्याणक से अभिनंदूँ।।6।।
जिस भूमि को तीर्थंकर ने, लेकर जन्म पवित्र किया।
तीर्थ अयोध्या श्रावस्ती, आदि को हमने नमन किया।।
रानीला में प्रगट हुये, श्री आदिनाथ वंदन करता।
चाँदखेड़ी के ऋषभनाथ का, ध्यान हृदय में नित धरता।।7।।

देहरे के चंदा, महावीर जी, सबकी विपदायें हरते।
श्री सम्मेदशिखर चंपापुर, औ सोनागिरि हृदय धरते।।
श्री नेमिनाथ जी मोक्ष गये, गिरनार गिरि को वंदन है।
आदिनाथ कैलाश गिरि से, मिट्टी बन गई चंदन है।।8।।
जितने मुनिवर सिद्ध हुए, निर्वाण भूमि को नमन करूँ।
कर्म नाश कर जग का दुख हर, मैं भी मुक्ति स्वयं वरूँ।।
शुभ भावों से की गई पूजा, शुभ फल को ही देती है।
भक्ति अर्चन पूजन वंदन, संकट सब हर लेती है।।9।।
मोह क्रोध तज पाप छोड़कर, निज का रूप निहारूँगा।
'स्वस्ति' जिन पूजन करके ही, प्रभु सम रूप सम्हारूँगा।।

## दोहा

पूजन से प्रभु आपकी, रोम - रोम हर्षाये।
जिन पूजन का फल मिले, स्वर्ग मोक्ष को पाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## दोहा

जिन शासन जिन देव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

# श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

## स्थापना (शंभू छन्द)

**सम्यक्त्व ज्ञान के आलय जिन, दर्शन तेरा सुखकारी है।**
**पावन पवित्र है नाम तेरा, महिमा जग संकट हारी है।।**
**भक्ति के उपवन से चुनकर, गुण सुमन चढ़ाने आया हूँ।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, मैं कर्म नशाने आया हूँ।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

**सदियों से गतियों के चक्कर, खाने में जीवन बीता है।**
**संसार में आने जाने में, ये समय हमारा रीता है।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**मैं जन्म मरण से मुक्त होऊँ, जल चढ़ा कर्म को हरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**ईर्ष्या चिन्ता और द्वेष हमें, अग्नि सम नित्य जलाती है।**
**प्रभु नाम आपका चंदन है, शीतलता मन में आती है।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**संसार ताप को शांत करूँ, चंदन से वंदन करना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**देहरी और देह से प्यार करूँ, पर यहीं पड़ी रह जायेगी।**
**अविनश्वर आतम को ध्याऊँ, अक्षय पद में पहुंचायेगी।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**अक्षयपुर में जा वास करूँ, अक्षत से कर्म को हरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**इंद्रियों के सुख में उलझा हूँ, मन भटक-भटक दुख पाता है।**
**आतम का सुख तुमने पाया, जो तप करने से आता है।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**पुष्पों को चरण में ले आया, अब काम वासना हरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

**खा-खाकर भी भूखा रहता, उसमें भी इच्छायें रहती।**
**संयम धर इस पर विजय पाऊँ, वरना आतम यह दुख सहती।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**नैवेद्य से वेदना दूर होय, इस क्षुधा रोग को हरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम में ज्ञान उजाला है, जिसमें सच्चाई दिखती है।**
**पर मोह अंधेरा छाया है, जिससे संसार में भ्रमती है।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**दीपक ले आया चरणों में, अज्ञान अंधेरा हरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों के बंधन में स्वतंत्र, फल भोगने में मजबूर रहे।**
**कर्मों का आस्रव बंध करूँ, फल पाने में हम कष्ट सहें।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**यह धूप चरण में ले आया, अब अशुभ कर्म को हरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**संयम तप त्याग के वृक्षों पर, फल फूल सुखों के लगते हैं।**
**प्रभु भक्ति पूजा अर्चन से, ये कर्म शीघ्र ही भगते हैं।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**श्रद्धा के फल ले आये प्रभु, मुक्ति सुख को अब वरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु भक्ति की शीतल छाया, कर्मों का ताप मिटाती है।**
**अंतर तम की शान्ति देकर, मुक्ति का पथ दिखलाती है।।**
**मुनिसुव्रतनाथ की पूजा से, सार्थक जीवन को करना है।**
**हम अर्घ्य चरण में ले आये, भवसागर से अब तरना है।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# पंच कल्याणक अर्घ्य

## शेर चाल (दे-दी हमें आजादी)

**प्राणत से तज के प्राण, पद्मा गर्भ में आये।**
**राजग्रही के राजा पिता, आप बताये।।**
**रत्नों से सारी पृथ्वी में, उजाला हो गया।**
**जन-जन के अशुभ कर्म का, काला भी खो गया।।**

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्ण द्वितीयां गर्भमंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंतिम शरीर पाके जन्म, आपने लिया।**
**इन्द्रों ने सुमेरू पे जाके, न्हवन कर दिया।।**
**अंतिम हो जन्म मेरा, ऐसे भाव बनायें।**
**गुण आप जैसे पाने को, हम अर्घ्य चढ़ायें।।**

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूर्व भव के याद से, वैराग्य आ गया।**
**संसार को तजा औ, आत्म ज्ञान भा गया।।**
**लेकर के मुनि दीक्षा, ध्यान लीन हो गये।**
**पतझड़ किया है कर्म का, वे बीज खो गये।।**

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारों करम को नाश, पूर्ण ज्ञान पा लिया।**
**भक्तों ने शरण पाई, औ प्रभु दर्श पा लिया।।**

वैशाख कृष्ण नवमी का, दिन धन्य हो गया।
हमने करी प्रभु पूजा, कर्म मेरा खो गया।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्ण नवम्यां केवलज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि नाथ बने व्रत दिये, मुनिराज बनाये।
पर आत्मा का ध्यान नहीं, कभी हटाये।।
आठों करम ने आपसे, ले ली थी विदाई।
आवागमन से मुक्त हुये, मुक्ति को पाई।।

ॐ ह्रीं फागुनकृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा**

लोहा को सोना करें, मुनिसुव्रत भगवान।
संकट हर विपदा हरो, बारम्बार प्रणाम।।

**मंडलोस्परिः पुष्पांजलिं क्षिपेत्**

# प्रथम वलय

## अनंतचतुष्टय अर्घ्यावली (चौपाई छंद)

तीन लोक त्रिकाल को देखा, राग द्वेष उसमें न झांका।
आतम दर्शन का सुख पाया, भक्त ने आकर शीश झुकाया।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्ञानमयी है आतम मेरा, सूरज सम दमके उजियारा।
कर्म मेघ को आप हटाये, ज्ञानानंद को आपहि पाये ।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपका सुख तौला न जाये, आपका सुख बोला न जाये।
ऐसे सुख के आप धनी हैं, इससे ही प्रभु मेरी बनी है।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक् सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बल अनंत आतम में होता, कर्म से जीव इसे है खोता।**
**पर मुनि प्रभू ने है प्रगटाया, इससे हमने अर्घ्य चढ़ाया।।4।।**

ॐ ह्रीं अनंत बल प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य (दोहा)

**ज्ञान ज्योति जलती रहे, मिलता रहे प्रकाश।**
**जिनवर तेरी भक्ति से, यही है मुझको आश।।**

ॐ ह्रीं प्रथम वलये श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**(श्रीफल चढ़ाये)**

# द्वितीय वलय

## अष्ट प्रातिहार्य अर्घ्यावली

### चौपाई

**तरू अशोक के नीचे जिनवर, शोक हरें सुख पा नारी नर।**
**मुनिसुव्रत दुख हरें हमारे, नैया मेरी करो किनारे।।5।।**

ॐ ह्रीं शोक रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वंपामीति स्वाहा।

**सिंहासन पर नाथ विराजे, शोभा प्रभु की अद्भुत साजे।**
**मेरा कष्ट जो आप मिटा दो, दुष्ट कर्म को शीघ्र भगा दो।।6।।**

ॐ ह्रीं मुक्ति पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वंपामीति स्वाहा।

**तीन छत्र सिर छाया करते, मानों सूर्य रश्मि को हरते।**
**मुझ पर तेरी छाया होवे, तब ही अपने कर्म को खोवे।।7।।**

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वंपामीति स्वाहा।

**चौंसठ चमर सदा ही ढुरते, इन्द्र चरण की सेवा करते।**
**मैं भी सेवा अवसर पाऊँ, इसीलिये आ अर्ध्य चढाऊँ। ।8। ।**

ॐ ह्रीं धर्म पथ अनुगमन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दुंदुभि बाजे गुण गाते हैं, भक्त हृदय को हर्षाते हैं।**
**मैं भी गीत आपके गाऊँ, अशुभ कर्म को दूर हटाऊँ। ।9। ।**

ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कल्पवृक्ष के पुष्प की वृष्टि, हर्षित होवे सारी सृष्टि।**
**मंद सुगंधित पवन बहायें, प्रभु कुछ हम पर कृपा दिखायें। ।10। ।**

ॐ ह्रीं मनवांछित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भामंडल का है उजियारा, सूर्य चांद का तेज भी हारा।**
**मोह के तम को मेरे नाशो, सम्यकज्ञान का दीप प्रकाशो। ।11। ।**

ॐ ह्रीं मोह कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आगम तत्व का ज्ञान करायें, दिव्य ध्वनि प्रभु जी बिखरायें।**
**स्वर्ग मोक्ष का मार्ग बताती, सुख पाने की राह दिखाती। ।12। ।**

ॐ ह्रीं प्रत्यक्ष तीर्थंकर वाणी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्यं (दोहा)

**पुण्यवान पूजा करे, करता प्रभु गुणगान।**
**भक्ति को स्वीकार लो, हे मेरे भगवान। ।**

ॐ ह्रीं द्वितीय वलये श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**(श्रीफल चढ़ाये)**

# तृतीय वलय

## अष्ट कर्म रहित मुनिसुव्रतनाथ भगवान अर्ध्यावली

### शंभू छंद

**ज्ञानावरणी बादल छाये, अज्ञान अंधेरा फैला है।**
**पर को अपना माना करता, इससे ही आतम मैला है।।**
**ज्ञानावरणी के नाश हेतु, यह अर्ध्य समर्पित करते हैं।**
**केवल की ज्योति हो जगमग, अज्ञान अंधेरा हरते हैं।।13।।**

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम आंखो से देख रहा, प्रत्यक्ष दर्श न कर पाया।**
**दर्शन पर परदा पड़ा हुआ, आतम दर्शन ना हो पाया।।**
**आतम दर्शन के हेतु प्रभो, यह अर्ध्य समर्पित करते हैं।**
**मुनिसुव्रत प्रभु की पूजा से, सब कठिन कार्य भी सरते हैं।।14।।**

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवन में सुख दुख का वेदन, कर्मो का फल ही बतलाया।**
**साता असाता के झूले हैं, कर्मो ने इसमें झुलवाया।।**
**सुख दुख से रिश्ता तजने को, यह अर्ध्य समर्पित करते हैं।**
**निज आत्म तत्व में लीन होऊँ, तो मोक्ष लक्ष्मी वरते हैं।।15।।**

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम मोह की मदिरा पीकर के, माया तृष्णा में झूम रहे।**
**आनंद मयी आतम भूले, इससे कर्मो के कष्ट सहे।।**
**कर्मो का राजा मोह कहा, इसके जाते ही सुखी हुये।**
**तब वीतरागता प्रगटेगी, भक्तों ने प्रभु के चरण छुये। ।।16।।**

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारों गतियां हैं जेल के सम, हम कैद इसी में रहते हैं।**
**जो मुक्त हुआ मुक्ति को पा, आनंद-आनंद में रहते हैं।।**
**आयु की वायु हट जाये, हम मुक्त गगन के पंछी हैं।**
**श्री मुनिसुव्रत भगवान मेरे, तेरे पद कमल के पंथी है। ।।17।।**

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इस जड़ शरीर की रचना तो, जड़ नाम कर्म करवाता है।**
**ऊंचा नीचा काला गोरा, कई रंगो में बनवाता है।।**
**प्रभु नाम कर्म से रहित आप, चेतन का तन ही पाया है।**
**ऐसा वर मैं भी पा जाऊँ, यह भक्त चरण में आया है। ।।18।।**

ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जन्मे हैं उच्च गोत्र में पर, सब कार्य निम्न ही करते हैं।**
**हम परम उच्च पद को पायें, तेरी पूजा अब करते हैं।।**
**प्रभु गोत्र कर्म से रहित आप, कर्मो का बंधन तोड़ा है।**
**तेरे सम मैं भी बन जाऊँ, जिनदेव से नाता जोड़ा है। ।।19।।**

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाधाओं का पथ मिला मुझे, चरणों में अब तक ना पहुँचा।**
**आलस्य भरा है जीवन में, कहता हूँ कर्मो ने खींचा।**
**आलस्य छोड़ पुरूषार्थ करूँ, बाधायें दूर सब हो जायें।**
**प्रभु अंतराय को नाश दिया, बाधा नाशन को हम आये।।20।।**

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य (दोहा)

**आठ कर्म के पाठ को, पढ़ता है संसार।**
**मुनिसुव्रत जी नाश के, पहुंचे मोक्ष मंझार।।**

ॐ ह्रीं तृतीय वलये श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**(श्रीफल चढ़ाये)**

# चतुर्थ वलय

## चौपाई

**शक्तिवान सामर्थ्य के धारी, स्वयं हुये दीक्षित मनहारी।**
**ऐसी शक्ति मैं भी पाऊँ, चरणन आकर अर्घ्य चढ़ाऊँ।।21।**

ॐ ह्रीं आत्म शक्ति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्म ज्योति से लोक प्रकाशित, सब पदार्थ उसमें हैं भासित।**
**मैं भी ऐसी ज्योति पाऊँ, जगमग जीवन आत्म कराऊँ।।22।।**

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्रगटाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जन्म मरण की बेड़ी तोड़ी, मुक्ति की जब पकड़ी डोरी।**
**कर्म बेड़ियाँ मेरी टूटें, इस जग से बस नाता टूटे।।23।।**

ॐ ह्रीं पुनर्भव विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तीन लोक के ईश आप हैं, भक्त करें बस तेरा जाप हैं।**
**मुनि ईश को शीश झुकाऊँ, दुख संकट को शीघ्र भगाऊँ।।24।।**

ॐ ह्रीं ईश दर्श प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय पद अक्षय है आतम, इस गुण कारण हो परमातम।**
**अक्षय नाम आपका गाया, भक्त ने आकर अर्घ्य चढ़ाया।।25।।**

ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग की नश्वर माया सारी, अविनश्वर है आत्म हमारी।**
**मैं भी अविनश्वरता पाऊँ, चरणों में आ अर्घ्य चढ़ाऊँ।।26।।**

ॐ ह्रीं अविनाशी सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शाश्वत मुक्त गगन के वासी, सिद्धालय के हैं प्रभु वासी।**
**शाश्वत पद पाने को आऊँ, चरणों में प्रभु अर्घ्य चढ़ाऊँ।।27।।**

ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्येष्ठ श्रेष्ठ वर सबसे अच्छे, आपहि भगवन जग में सच्चे।**
**सच्चाई पाने को आया, चरणों में आ शीश झुकाया।।28।।**

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ स्थान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इंद्रिय विजय से संयम धारा, कर्मो पर जय मुक्ति द्वारा।**
**इंद्रिय विजय बनूँ मैं भगवन, शक्ति देना आया चरणन।।29।।**

ॐ ह्रीं कर्म विजय प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## **दोहा** (तर्ज-राजा राणा....)

**भव्य बंधू के मित्र हो, शीघ्र बुलाओ नाथ।**
**आश लगाये बैठे हैं, शीघ्र दिखाओ पाथ।।30।।**

ॐ ह्रीं धर्म बन्धु श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भक्तों को प्रभु तारते, दिखा मोक्ष की राह।**
**पंक्ति में हम खड़ें हैं, हमें आपकी चाह।।31।।**

ॐ ह्रीं भव सागर पाराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जन्म दुबारा हो नहीं, ना धरती पर आऐं।**
**अंतिम जन्म भी हो मेरा, इससे शीश झुकायें।।32।।**

ॐ ह्रीं अंतिम जन्म प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वयं ज्योति जाग्रत करी, जगमग है भू लोक।**
**जगमग तन मन हो मेरा, मिटे हमारा शोक।।33।।**

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोह शत्रु ही जगत में, सब जन को भरमाये।**
**मोह जीत मुक्ति गये, इससे शीश झुकायें।।34।।**

ॐ ह्रीं मोह शत्रु विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्म मैल को धो दिया, सिद्ध शुद्ध कहलायें।**
**ऐसी शुद्धी हो मेरी, चरणन अर्घ्य चढ़ायें।।35।।**

ॐ ह्रीं अशुभ कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वार्थ सिद्ध कर मोक्ष में, चले गये हो नाथ।**
**श्री सिद्धार्थ के नाम से, मिले हमें भी पाथ।।36।।**

ॐ ह्रीं कार्य सिद्धि कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ध्येय प्रभु का ध्यान कर, मन शुद्धि करवायें।**
**तन मन धन शुद्धि करें, चरणन अर्घ्य चढ़ायें।।37।।**

ॐ ह्रीं ध्येय वस्तु प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गुण अनंत के हो धनी, गुण पाने हम आयें।**
**निर्गुणियों को गुण मिले, निर्धन धन को पाये।।38।।**

ॐ ह्रीं सर्वगुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चाल छंद** (तर्ज-ऐ मेरे वतन के........)

**नहि दुखी बुढ़ापा आये, जिन अजर नाम बतलाये।**
**यह जरा मेरा ना आये, चरणों में शीश झुकायें।।39।।**

ॐ ह्रीं जरा रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु धर्म के हैं अध्यक्ष, नहि संग में कोई विपक्ष।**
**मैं भी ऐसा सब पाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।40।।**

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्ष पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पावन वाणी पावनता, झरती है ज्यों सावनता।**
**हित मित प्रिय वाणी पाऊँ, चरणों मे अर्घ्य चढाऊँ।।41।।**

ॐ ह्रीं प्रिय वाणी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**था दिव्य रूप मनहारी, इकटक लखते नर नारी।**
**यह दिव्य रूप मैं पाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।42।।**

ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों की धूल झड़ायी, सुंदर आतम प्रगटाई।**
**प्रभु अरज नाम के धारी, पूजा हम करें तिहारी।।43।।**

ॐ ह्रीं कर्म मैल विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु सौ इन्द्रों से पूजित, उनका यश जग में गूंजित।**
**पूजा कर धन्य हुये हैं, आनंद भी आज लिये हैं।।44।।**

ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो पूर्ण ज्ञान के धारी, 'स्नातक' संज्ञा के धारी।**
**'स्नातक' हम भी होवे, कर्मों को सारे खोवें।।45।।**

ॐ ह्रीं आत्म ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बाधायें सुख में आये, हम कर्मों के हैं सताये।**
**प्रभु निराबाध सुख धारी, पूजा हम करें तिहारी।।46।।**

ॐ ह्रीं बाधारहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मेरू सम अचल हो स्वामी, आपहि हो अंतर्यामी।**
**स्थिरता मुझमें आये, चंचलता दूर भगायें।।47।।**

ॐ ह्रीं मन स्थिरता प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आगे-आगे हैं जिनवर, पीछे सब भक्त हैं मनहर।**
**पद चिन्ह पे हम हैं चलते, तब वीतराग सुख वरते।।48।।**

ॐ ह्रीं प्रभु चरण चिन्ह गमन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु ज्ञान नेत्र प्रगटाया, उसमें आतम झलकाया।**
**इस नेत्र को ध्यान से खोलें, फिर ना संसार मे डोलें।।49।।**

ॐ ह्रीं ज्ञान नेत्र उन्मीलित कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुक्ति के आप प्रणेता, और बने वहां के नेता।**
**हम भक्त आपके दाता, मेटो प्रभु कर्म असाता।।50।।**

ॐ ह्रीं धर्म नेता गुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तीनों लोकों को जानो, ना बात किसी की मानों।**
**सर्वज्ञ हमारे स्वामी, करते हैं भक्त नमामि।।5।।**

ॐ ह्रीं सर्वज्ञ दर्शन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भक्तों को हो सुखदायक, भक्तों के आपहि नायक।**
**भक्तों की रक्षा करना, बाधाओं को प्रभु हरना।।52।।**

ॐ ह्रीं सर्व संकट हराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भव सागर पार किया है, मुक्ति जा वास लिया है।**
**हमको प्रभु पार उतारो, अब मेरी ओर निहारो।।53।।**

ॐ ह्रीं दुख सागर पार कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सातों भय आपसे डरते, भक्तों के भय को हरते।**
**हमें अभय करो जिनदेवा, हम करें आपकी सेवा।।54।।**

ॐ ह्रीं सप्त भय रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीते जो निज आतम को, पाये वो परमातम को।**
**वह वीर नाम का धारी, मेरी भी विपदा टारी।।55।।**

ॐ ह्रीं त्रिलोक विजय कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ये शोक तुम्हें न सताये, निर्मोही दूर भगाये।**
**मेरे इस शोक को हर दो, झोली में खुशियां भर दो।।56।।**

ॐ ह्रीं रोग शोक रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विद्वान सुधी विज्ञाता, ज्ञानी हो आतम ज्ञाता।**
**वह ज्ञान कर्म को हरता, ज्ञानी न जग से डरता।।57।।**

ॐ ह्रीं आत्म ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांति पा शांति बांटी, कर्मों की बेड़ी काटी।**
**यह शांति मैं भी पाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।58।।**

ॐ ह्रीं आत्मिक शांति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अध्यातम अमृत पिया, भक्तों को दान में दिया।**
**अमृत मय जीवन कीना, भक्तों ने शरणा लीना।।59।।**

ॐ ह्रीं अध्यात्मिक सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंतरतम शुद्धि कीनी, आतम में दृष्टि दीनी।**
**अंतर मन कली खिला दो, मुझसे ही मुझे मिला दो।।60।।**

ॐ ह्रीं अंतर दृष्टि कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित पावन)

**निज आत्मा के कार्य पूरे, करके सिद्धि पाई है।**
**कृत कृत्य जिनवर हो गये, मन शांत छवि मुस्काई है।।61।**

ॐ ह्रीं कार्य सिद्धि कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मृत्युंजयी मृत्यु पे जय पा, आप मुक्ति पा गये।**
**मृत्युंजयी हम भी बने, इससे शरण में आ गये।।62।।**

ॐ ह्रीं निर्वाण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अध्यात्म का अमृत पिया, और स्वाद सबको दे दिया।**
**अमृत को पी होकर अमर, आशीष सबको दे दिया।।63।।**

ॐ ह्रीं ज्ञान अमृत प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्म का आनंद लिया, मुस्कान मुख पर आ गई।**
**मुद्रा प्रसन्न भी है तुम्हारी, मन को मेरे भा गई।।64।।**

ॐ ह्रीं अंतरंग प्रसन्नता प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य (दोहा)

**गुण के सागर आप हैं, बूंद के सम गुण गायें।**
**चरणों अर्घ्य चढ़ाय के, शत्-शत् शीश झुकायें।।**

ॐ ह्रीं चतुर्थ वलये श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**(श्रीफल चढ़ाये)**

# पंचम वलय

## गीता छंद

**प्रभु पाप तुमसे दूर भागा, पुण्य चरणों आ गया।**
**हो पुण्यधारी आत्मा, यह भक्त शरणा पा गया।।65।।**

ॐ ह्रीं पुण्यानुबंधी पुण्य प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सागर समान हैं गुण तुम्हारे, बूंदे कुछ हमको मिलें।**
**गुणवान बन पूजा करूँ, तो फूल सुख के तब खिलें।।66।।**

ॐ ह्रीं वीतराग गुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पावन तुम्हारा नाम प्रभु जी, जप के पावन मैं हुआ।**
**सब रोग संकट भी टले, जबसे चरण को आ छुआ।।67।।**

ॐ ह्रीं पावन मन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु पुण्य का शासन तुम्हारा, उसमें आके हम रहें।**
**हो पुण्यमय जीवन हमारा, अर्जी प्रभु तुमसे कहें।।68।।**

ॐ ह्रीं पाप विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नहि द्वेष क्लेश न द्वंद है, प्रभु वीतरागी देवता।**
**हम भी कषायों से बचे, सार्थक हमारी सेवता।।69।।**

ॐ ह्रीं गृह क्लेश विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सबसे बड़ा पद पाके भी, अभिमान तुमसे दूर है।**
**सेवक चरण के हम बनें, तो सुःख से भरपूर है।।70।।**

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोहा हैं तुमने सब जगत को, किन्तु निर्मोही बने।**
**हम मोह कीचड़ में फंसे, संकट सदा आये घने।।71।।**

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आहार न लेते कभी, आहार की भी हार है।**
**यह रोग मुझको नित सताता, इससे मेरी हार है।।**
**प्रभु तेरी पूजा से हमें, इस भूख पर भी जय मिले।**
**संयम की सरिता में नहाऊँ, सौख्य की कलियां खिले।।72।।**

ॐ ह्रीं क्षुधा व्याधि विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सारे कलंको से रहित, निकलंक बन जीवन जिया।**
**मैं भी कलंको से रहित हो, भक्ति का अमृत पिया।।73।।**

ॐ ह्रीं निकलंक गुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई उपद्रव आपके, आगे नही टिक पाता है।**
**मेरे उपद्रव दूर कर दो, भक्त पूजा गाता है।।74।।**

ॐ ह्रीं मम कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जीवन सफल है आज मेरा, नयन से दर्शन किये।**
**त्रैलोक्य पति भव आज मेरा, भक्ति से कम कर दिये।।75।।**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यपति दर्शन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्ञान दर्शन से पवित्र हो, सबको पावन कर दिया।**
**शुभ धर्म से पावन बनूँ मैं, अर्घ्य चरणन धर दिया।।76।।**

ॐ ह्रीं निज आत्म पवित्र कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**माता पिता हो भाई बहना, और बंधु हो तुम्ही।**
**रक्षा प्रभु करना हमारी, तुमसे भगवन है बनी।।77।।**

ॐ ह्रीं मम रक्षा कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**औषध के सम है नाम तेरा, रोग को मेरे हरें।**
**मैं नाम जपता ही रहूँ, तो सुख से झोली को भरें।।78।।**

ॐ ह्रीं स्वस्थ जीवन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वरदान दो कि मैं प्रभु, बस गुण सदा गाता रहूँ।**
**मन शांत हो तन स्वस्थ हो, चरणों में नित आता रहूँ।।79।।**

ॐ ह्रीं तन मन शांति कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तीनों भवन के हो पिता, पापों से करते दूर हो।**
**छाया में तेरी हम रहें, तो सुःख से भरपूर हों।।80।।**

ॐ ह्रीं पितृ छाया प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम मोक्ष सिद्धि में सहायक, सुख अनंत को पायेंगे।**
**तेरा सहारा गर मिले, तो फिर न वापस आयेंगे।।81।।**

ॐ ह्रीं मम धर्म रक्षा कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जब मोक्ष का है लक्ष्य मेरा, तुम ही कारण हो बने।**
**इक-इक कदम बढ़ता चलूँ, बाधायें खुद ही सब हने।।82।।**

ॐ ह्रीं मोक्ष लक्ष्य प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पावन परम ईश्वर हुये, भक्तों के पालनहार हो।**
**कुछ तो कृपा की दृष्टि हो, तुमही तो करूणाकार हो।।83।।**

ॐ ह्रीं प्रभु कृपा प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## भुजंग प्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं)

**महायश तुम्हारा, चहुं ओर फैला।**
**सभी भक्त आये, चरण के हैं चेला।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।84।।**

ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**न आकुल न व्याकुल, निराकुल ही रहते।**
**महाधैर्य धारी, नहीं कुछ भी कहते।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।85।।**

ॐ ह्रीं निराकुलता प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सभी संपदा, तेरे चरणों की दासी।**
**जगत लक्ष्मी भी है, चरणों की प्यासी।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।86।।**

ॐ ह्रीं जगत संपदा प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम शक्ति रहित, तुम महाशक्ति धारी।**
**हमें शक्ति दो, कर्म युद्ध है भारी।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।87।।**

ॐ ह्रीं महाशक्ति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उत्सव सुरेन्द्रों ने, आकर के कीना।**
**कल्याण करने को, आये प्रवीना ।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।88।।**

ॐ ह्रीं निज कल्याण कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सभी मंत्र निर्मित, तुम्हीं से हुये हैं।**
**महामंत्र ने दुःख को, दूर किये हैं।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।89।।**

ॐ ह्रीं महामंत्र सिद्धि प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सभी देव तेरे, चरण के हैं सेवी।**
**महादेव हो तुम, करें सेव देवी।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।90।।**

ॐ ह्रीं प्रभु सेवा प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सभी दोषों से मुक्त, अविकारी जिनवर।**
**जो पाये शरण को, वो हो जाये मनहर।।**
**यशस्वी तपस्वी, बने हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।91।।**

ॐ ह्रीं दोष रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कल्याण करके, जगत का भी कीना।**
**मंगल किया, दिव्य उपदेश दीना।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।92।।**

ॐ ह्रीं मंगल वाणी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सभी जीव से प्रेम, तुमने किया है।**
**"प्रणय" नाम सार्थक, कर ही दिया है।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।93।।**

ॐ ह्रीं सर्व जीव प्रेम प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चले मुक्ति के पथ, औ सबको चलाया।**
**करम काटने में, निजातम लगाया।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।94।।**

ॐ ह्रीं कर्म बंधन मुक्त कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आनंद लेते, औ आनंद देते।**
**आनंद से झोली, सब भर ही लेते।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।95।।**

ॐ ह्रीं आत्म आनंद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निंदा के लक्षण, न कोई हैं तुम में।**
**अनिंद्य हो सुखकर, भरो गुण ये हम में।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।96।।**

ॐ ह्रीं मानसिक सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सभी कामना पूर्ण, करते हो क्षण में।**
**तुम्ही कामधेनु, हो पूरण जी जग में।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।97।।**

ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिंतामणि दूर, चिंतायें करते।**
**भक्तों की सारी, वे विपदायें हरते।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।98।।**

ॐ ह्रीं चिंतित वस्तु प्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्लेशों से दूर, परम शान्ति पायी।**
**तेरी संगति गंगा, सुःख की बहायी।।**
**यशस्वी तपस्वी, बनें हम पुजारी।**
**विपद सारी हर लो, हम जग के दुखारी।।99।।**

ॐ ह्रीं परम् शांति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी)

**तुम इष्ट हो विशिष्ट हो औ, श्रेष्ठ तुम्हीं हों।**
**हो कामना से दूर प्रभु, ज्येष्ठ तुम्हीं हों।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।100।।**

ॐ ह्रीं इष्ट वस्तु प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुम सत्य वाणी सत्य ज्ञान, सत्य धर्म हो।**
**हो सत्य परायण भी तुम्हीं, हरते भ्रम हो।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।101।।**

ॐ ह्रीं सत्य ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आतम के ज्ञान से सुखी, जिनदेव हो गये।**
**भक्तों ने करी भक्ति, सुखी वे भी हो गये।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।102।।**

ॐ ह्रीं जिनदेव भक्ति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दर्शन तुम्हारा नाथ, दुष्ट कर्म को हरता।**
**तव नाम सुदर्शन सभी के, कष्ट को हरता।।**

**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।103।।**

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भक्तों के मन को मोहते हैं, रूप मनोहर।**
**जय-जय करें सब भक्त तेरे, आये हैं दर पर।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।104।।**

ॐ ह्रीं मनोहर रूप प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तन मन से स्वस्थ कर्म रहित, हो गये हो आप।**
**हमको भी करो स्वस्थ प्रभु, कर रहें हैं जाप।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।105।।**

ॐ ह्रीं तन मन स्वस्थ कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब कर्म रूपी शत्रुओं को, आपने मारा।**
**मेरे भी शत्रुओं को प्रभु, कर दो किनारा।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।106।।**

ॐ ह्रीं कर्म शत्रु विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भक्तों की कामना को पूर्ण, आप ही करो।**
**हो कल्पवृक्ष आप तो, भंडार भी भरो।।**
**आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।**
**चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।107।।**

ॐ ह्रीं मम कामना पूर्ण कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अध्यात्म का अमृत पिया, और ज्ञान का भोजन।**
**आतम से पाया आपने, आनंद में तन मन।।**

आधि हरो व्याधि हरो, मेरे कष्ट भी हरो।
चरणों में पड़ा नाथ, सौख्य संपदा भरो।।108।।

ॐ ह्रीं सुखामृत प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य

### शंभू छंद

कलयुग में नाम सहारा है, तन मन से प्रभु हम जपते हैं।
आकुलता फिर भी भरमाये, तो आकर तुमको लखते हैं।।
प्रभु नाम में इतनी शक्ति है, सब भूत प्रेत भी भग जावें।
भाग्योदय यश संपति को पा, उनके दुर्दिन भी फिर जावें।।

ॐ ह्रीं पंचम् वलये श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ाये)

# जयमाला

### दोहा

मुनिसुव्रत भगवान के, गुण गाये संसार।
करूँ अर्चना भाव से, मिले धर्म का सार।।

### शंभू छंद

हे परम पिता हे विश्व पिता, तुम रक्षा करने वाले हो।
भक्तों को चरणों में रखकर, सबके दुख हरने वाले हो।।
पांचो कल्याणक धारी हो, भक्तों का भी कल्याण किया।
शुभ गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, पाकर के जीवन धन्य किया।।1।।

इंद्रों देवों ने आकर के, चरणों की सेवा कीनी थी।
जिस-जिस ने शरणा को पाया, आतम में दृष्टि दीनी थी।।
मुनिवर की दीक्षा धारण कर, आतम में ध्यान लगाया था।
तप करते थे वे घोर-घोर, कर्मों को शीघ्र भगाया था।।2।।

आतम के ध्यान से ज्ञानी बन, अध्यातम अमृत पान किया।
आतम से आतम की शुद्धि, आतम से आतम जान लिया।।
संसारी आतम कर्म सहित, आतम को कष्ट दिलाती है।
तप से कर्मों को दूर करें, तो आत्म शांति पाती है।।3।।

संसारी को यह मोह कर्म, संसार में नाच नचाता है।
संतोषी आतम हो जाये, जो झंझट दूर कराता है।।
कर्मों को निमंत्रण देने का, यह राग द्वेष ही काम करे।
कर्मों के मारे हम बैठे, अब बस तेरा ही ध्यान करें।।4।।

पुरूषार्थ हमारा सोया है, आलस में जीवन खोते हैं।
विपरीत मार्ग पर हम चलते, और बीज पाप के बोते हैं।।
पापों का फल पा करके प्रभु, आंखों से आसूं बहते हैं।
कर्मों के मेघ घिरे प्रभुवर, और दुख के कांटे चुभते हैं।।5।।

हर कार्य में बाधा आती है, बाधाओं को तुम दूर करो।
संकट आपत्ति आये घनी, मुनिसुव्रत प्रभु जी शीघ्र हरो।।
है दुखमय कथा मेरी जिनवर, जन्मों-जन्मों की गाथा है।
जिव्हा इसको न कह पाये, ना मिली अभी तक साता है।।6।।

तेरी भक्ति करने आया, गुणगान तेरा ही गाया है।
कुछ अपनी व्यथा कही जिनवर, बस तेरा रूप सुहाया है।।
भक्ति के फल में हे जिनवर, बस एक सहारा दे देना।
जब तक तन में यह सांस रहे, चरणों में अपने रख लेना।।7।।

## दोहा

मुनिसुव्रत भगवान की, भक्ति करी अपार।
मन में मेरे आ बसो, छूट जाये संसार।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्रीफल चढ़ाये)

### दोहा

**भाव शुद्ध कर दो मेरे, मुनिसुव्रत भगवान।**
**शनि ग्रह बाधा दूर हो, "स्वस्ति" करे प्रणाम।।**

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# समुच्चय महार्घ्य

### गीता छंद

**अरिहंत सिद्धाचार्य पूजूँ, ज्ञानी श्रुत सुमिरण करूँ।**
**श्री मुनिवरों के चरण पूजूँ, वाणी माँ हृदय धरूँ।।**
**षोडश रत्नत्रय धर्म पूजूँ, आत्महित संयम धरूँ।**
**त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, जिन प्रभु वंदन करूँ।।**
**जिन चैत्य चैत्यालय दरशकर, भावना शुभ भाऊँगा।**
**श्री मेरु नंदीश्वर जिनालय, वंदना को जाऊँगा।।**
**सब तीर्थ, क्षेत्र अतिशयों को, देव नर पूजें सदा।**
**कैलाश गिरि सम्मेद की, नित प्रातः भक्ति हो सदा।।**
**चंपापुरी-पावापुरी, श्री सिद्ध क्षेत्रों को नमन्।**
**चौबीस श्री जिनराज की, भक्ति से खिलता है चमन।।**

### दोहा

**अष्ट द्रव्य थाली सजा, प्रभु पूजन को आय।**
**सहस्त्र नाम वाले प्रभु, चरणों अर्घ्य चढ़ाय।।**

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो महाअर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

# शांति पाठ

श्री चंद्र सम हे शांति प्रभु जी, आऊँ अब शरणा तेरे।
हम शील गुणव्रत धार लें औ, दोष सब जग के हरें।।
सुर देव नर पूजें सदा, श्री शान्ति हित ध्याते उन्हें।
चौंतीस अतिशय युक्त हैं, सुख भव्यजन पाते जिन्हें।।
परम शान्ति अनूप आनन्द, ध्यान में तल्लीन हैं।
पाई जिससे सिद्धि तुमने, वह रत्नत्रय तीन हैं।।
सम्पूर्ण प्राणी मात्र को, और ध्यानी को सुख सम्पदा।
राजा प्रजा अरु सर्वजन को, कष्ट ना होवे कदा।।
होवे सुवृष्टि कुदृष्टि खोवे, व्याधि सब की दूर हों।
त्रैलोक्य नाथ की भक्ति से, हृदय सदा भरपूर हो।।
झूठ हिंसा क्रोध कर्मों से किया, तन मन मलिन।
सत्य संयम ध्यान कर, खिल जावे भव्यों का सुमन।।
दुष्कृत्य और दुष्काल सब, प्रभु पास न आवें कभी।
पा नेह दृष्टि तेरी प्रभु जी, स्वस्थ जन होवें सभी।।

## दोहा

चहुँ कर्मों को नष्ट कर, लिया है केवलज्ञान।
तीन लोक में शान्ति हो, त्रिलोकी भगवान।।

## गीतिका छंद

हृदय कमल हो ज्ञान लक्ष्मी, पाऊँ फिर परमात्मा।
गुण अनंतानंत धारूँ, ध्याऊँ सदा निज आत्मा।।
वाणी हित-मित नित उचारें, चतुर्विधि सेवा करें।
श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र मेरे, अष्ट कर्मों को हरें।।
तव चरण हो मम हृदय में, हृदय चरणों में रहे।
श्री तरण तारण भव निवारण, त्याग कर मुक्ति गहे।।

पूजन करी प्रभु आपकी, यदि हो गई गलती कहीं।
अज्ञान और प्रमाद वश, मैंने उसे जाना नहीं।।
क्षमा करना, क्षमा करना, क्षमा करना नाथ जी।
शेष जीवन जो है मेरा, तव चरण हो साथ जी।।
कर्म क्षय हो बोधि पाऊँ, गमन हो सुगति जी।
अंत समय समाधि पाऊँ, ध्यान हो तुम चरण जी।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।
।। नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें।।

# विसर्जन

## गीतिका छंद

जानकर अन्जाने में प्रभु, हो गई जो गलतियाँ।
प्रायश्चित दे क्षमा करना, शुद्ध हो मेरा जिया।।
मन्त्र पूजन ज्ञान ध्यान, शुभाचरण से हीन हूँ।
बुद्धि मेरी शुद्ध होवे, प्रभु चरण में लीन हूँ।।
नित्य पूजा भक्ति से, आराधना मैं नित करूँ।
सर्व दोषों का हरण कर, कर्म को नित परिहरूँ।।
मेरी पूजा भक्ति में, आये यहाँ जो देव गण।
मैं करूँ उनका विसर्जन, और प्रभु चरणों नमन।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

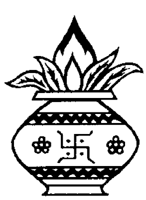

# श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

## दोहा

पंच परम परमेष्ठी जी, जग में आप महान।
ध्यान करूँ मैं आपका, बारम्बार प्रणाम।।
मुनिसुव्रत भगवान का, नाम बड़ा सुखकार।
मेरी बाधायें हरें, हमें करें भव पार।।

## चौपाई छंद

दुःखहारी सुखकारी जिनवर, मूरत आपकी प्यारी जिनवर।
भक्त भक्ति चरणों की करते, चरण कमल में नमन हैं करते।।

सिद्ध शिला के अधिनायक हो, भक्तजनों को सुखदायक हो।
रत्नों की वर्षा होती है, धर्मों के मिलते मोती हैं।।

भक्ति के भावों से आया, भव-भव का संताप सताया।
सब संताप दूर हो जायें, इन्द्रों की सेवा को पायें।।

कल्याणक को इन्द्र मनाया, पाण्डुक वन अभिषेक कराया।
मुनिसुव्रतजी नाम को पाया, सुव्रत व्रत का पाठ पढ़ाया।।

पदमा माँ के गर्भ में आये, सुमित्र पितु सुन मन हर्षाये।
दिव्य दिवाकर आने वाला, इन्द्र खड़े लेकर जयमाला।।

दशों दिशा फैली उजियाली, जिन कांति तम हरने वाली।
सुर विमान तज भू पर आये, पांडुक वन अभिषेक कराये।।

तीर्थंकर की गुण गण गरिमा, वचन कहें ना पूरी महिमा।
परिजन पुरजन लख हर्षाते, प्यार सभी का आप हैं पाते।।

फिर वैराग्य उमड़कर आया, तज दी नश्वर काया माया।
नमः सिद्ध कह दीक्षा लीनी, दृष्टि आतम में है दीनी।।

दसधर्मों की पहनी माला, महाव्रतों को आपने पाला।
घोर तपों को वे नित तपते, जंगल में रह आतम भजते।।

तप से कर्म की धूम उड़ाई, आतम की नित करें सफाई।
पीड़ित कर्मो को कर दीना, ऋद्धि-सिद्धियां आई नवीना।।

तप से आतम कुंदन करते, कर्म इसी से आप ही हरते।
त्याग धर्म ही सबसे सुन्दर, मिले इसी से मुक्ति समुंदर।।

तप से आतम शुद्ध है होता, तप तो सुख के बीज है बोता ।
अनुनय करते हम भी प्रभुवर, आशा पूरी करना जिनवर ।।

करूणा सागर आप बहा दो, मुझसे मेरा मिलन करा दो।
समता का देखूँ मैं दर्पण, तन मन जीवन तुमको अर्पण।।

मेरी सारी व्यथा को हरना, शांतिमय जीवन को करना।
सच्ची भक्ति जो करता है, दुख हर सुख शांति वरता है।।

चिन्ता सारी दूर हैं होती, चिंतन की कलियां हैं खिलती।
निर्धन की झोली भर जावे, अंतराय ना कभी सतावे।।

संकट भक्ति से कट जायें, जो भी प्रभु के नाम को गायें।
शनि ग्रह जब करता परेशान, ले लो मुनिसुव्रत का नाम।।

उत्तम भाव से प्रभु को ध्याना, नित प्रति उनको शीश झुकाना।
हर दिन घर में हो दीवाली, दूर होय शनि छाया काली।।

अवगुण हर गुण का भण्डारा, संकट से सब करें किनारा।
अर्जी मेरी सुनना प्रभुवर, चरणों में आया हूँ जिनवर।।

मन में मेरे करो उजाला, चिन्ता की पहनूँ ना माला।
ज्ञान दीप मेरा प्रजला दो, मुक्ति का मारग दिखला दो।।

आप जगत से मुक्त हुये हो, आप गुणों से युक्त हुये हो।
श्री सम्मेद से मुक्ति पाई,"स्वस्ति" के प्रभु बनो सहाई।।

**दोहा**

**चालीसा चालीस दिन, पढ़ना रख शुभ भाव।**
**सुख संपत्ति निशदिन बढ़े, पार लगेगी नाव।।**
**मुनिसुव्रत भगवान से, रहो नहीं तुम दूर।**
**नमन नित्य ही चरण में, सुख होवे भरपूर।।**

# श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है....)

**मुनिसुव्रत का ध्यान है, चरणों में प्रणाम है।**
**मुनिसुव्रत प्रभु के चरणों की, आरती बारंबार है।।**

**हो.....मंगल आरती हाथ में लेकर, प्रभु शरणा में आया जी-2**
**दुख को हरकर सुख को भरना, आशा मन में लाया जी-2**
**मुनिसुव्रत का ध्यान है........**

**हो.....मात श्यामा के राज दुलारे, पिता सुमित्र के प्यारे जी-2**
**मात पिता पाकर हर्षाये, सबकी आंख के तारे जी-2**
**मुनिसुव्रत का ध्यान है........**

**राजगृही को तीर्थ बनाया, समवशरण था आया जी-2**
**ध्यान लगाया भाग्य जगाया, आकर तेरे द्वारे जी-2**
**मुनिसुव्रत का ध्यान है........**

**हो....गिरि सम्मेद से मोक्ष गये हो, भाग्य आपके जागे जी-2**
**'स्वस्ति' को भी मुक्ति दिला दो, शरण आपकी बैठूँ जी-2**

**मुनिसुव्रत का ध्यान है, चरणों में प्रणाम है।**
**मुनिसुव्रत प्रभु के चरणों की, आरती बारंबार है।।**

# व्रत की विधि

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान व्रत, प्रभु मुनिसुव्रतनाथ की आराधना साधना और उन जैसे गुणों की प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। इस विधान से मनवांछित फल स्वयं ही प्राप्त होते हैं। क्योंकि प्रभु मुनिसुव्रतनाथ स्वयं ही कल्पवृक्ष हैं। प्रभु के गुण अनंत हैं किन्तु 108 गुणों की स्तुति कर व्रत किये जायेंगे। एक गुण में अनंत गुण समाहित हैं। इन्हीं गुणों की साधना शक्ति के अनुसार एकासन उपवास आदि से कर सकते हैं। इस व्रत का प्रारम्भ भगवान मुनिसुव्रत के किसी भी कल्याणक की तिथि से प्रारम्भ करें और मोक्ष कल्याणक की तिथि या किसी शुभ दिन में समापन करें। उद्यापन में श्री मुनिसुव्रत विधान करें एवं इच्छित वस्तु का दान करें। यह व्रत स्वयं करके दूसरे को करने की प्रेरणा दें। इस तरह 108 व्रत करके भाव से की जाये तो सच्चे सुख की प्राप्ति भी संभव है। मनवांछित फल प्राप्त करें।

निम्नलिखित मंत्र क्रम से व्रत के दिन करें:-

1. ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
2. ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
3. ॐ ह्रीं सम्यक् सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
4. ॐ ह्रीं अनंत बल प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
5. ॐ ह्रीं शोक रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
6. ॐ ह्रीं मुक्ति पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
7. ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
8. ॐ ह्रीं धर्म पथ अनुगमन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
9. ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
10. ॐ ह्रीं मनवांछित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
11. ॐ ह्रीं मोह कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
12. ॐ ह्रीं प्रत्यक्ष तीर्थंकर वाणी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः

13. ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
14. ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
15. ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
16. ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
17. ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
18. ॐ ह्रीं नाम कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
19. ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
20. ॐ ह्रीं अंतराय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
21. ॐ ह्रीं आत्म शक्ति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
22. ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्रगटाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
23. ॐ ह्रीं पुनर्भव विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
24. ॐ ह्रीं ईश दर्श प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
25. ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
26. ॐ ह्रीं अविनाशी सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
27. ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
28. ॐ ह्रीं ज्येष्ठ स्थान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
29. ॐ ह्रीं कर्म विजय प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
30. ॐ ह्रीं धर्म बन्धु प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
31. ॐ ह्रीं भव सागर प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
32. ॐ ह्रीं अंतिम जन्म प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
33. ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
34. ॐ ह्रीं मोह शत्रु विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
35. ॐ ह्रीं अशुभ कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
36. ॐ ह्रीं कार्य सिद्धि कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
37. ॐ ह्रीं ध्येय वस्तु प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
38. ॐ ह्रीं सर्वगुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
39. ॐ ह्रीं जरा रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः

40. ॐ ह्रीं धर्माध्यक्ष पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
41. ॐ ह्रीं प्रिय वाणी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
42. ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
43. ॐ ह्रीं कर्म मैल विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
44. ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
45. ॐ ह्रीं आत्म ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
46. ॐ ह्रीं बाधारहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
47. ॐ ह्रीं मन स्थिरता प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
48. ॐ ह्रीं प्रभु चरण चिन्ह गमन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
49. ॐ ह्रीं ज्ञान नेत्र उन्मीलित कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
50. ॐ ह्रीं धर्म नेता गुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
51. ॐ ह्रीं सर्वज्ञ दर्शन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
52. ॐ ह्रीं सर्व संकट हराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
53. ॐ ह्रीं दुख सागर पार कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
54. ॐ ह्रीं सात भय रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
55. ॐ ह्रीं त्रिलोक विजय कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
56. ॐ ह्रीं रोग शोक रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
57. ॐ ह्रीं आत्म ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
58. ॐ ह्रीं आत्मिक शांति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
59. ॐ ह्रीं अध्यात्मिक सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
60. ॐ ह्रीं अंतर दृष्टि कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
61. ॐ ह्रीं कार्य सिद्धि कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
62. ॐ ह्रीं निर्वाण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
63. ॐ ह्रीं ज्ञान अमृत प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
64. ॐ ह्रीं अंतरंग प्रसन्नता प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
65. ॐ ह्रीं पुण्यानुबंधी पुण्य प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
66. ॐ ह्रीं वीतराग गुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः

67. ॐ ह्रीं पावन मन कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
68. ॐ ह्रीं पाप विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
69. ॐ ह्रीं गृह द्वेष क्लेश विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
70. ॐ ह्रीं मन कषाय विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
71. ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
72. ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
73. ॐ ह्रीं निकलंक गुण प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
74. ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
75. ॐ ह्रीं त्रैलोक्य पति दर्शन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
76. ॐ ह्रीं निज आत्म पवित्र कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
77. ॐ ह्रीं मम रक्षा कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
78. ॐ ह्रीं स्वस्थ जीवन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
79. ॐ ह्रीं तन मन शांति कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
80. ॐ ह्रीं पितृ छाया प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
81. ॐ ह्रीं मम धर्म रक्षा कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
82. ॐ ह्रीं मोक्ष लक्ष्य प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
83. ॐ ह्रीं प्रभु कृपा प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
84. ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
85. ॐ ह्रीं निराकुलता प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
86. ॐ ह्रीं जगत संपदा प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
87. ॐ ह्रीं महाशक्ति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
88. ॐ ह्रीं निज कल्याण कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
89. ॐ ह्रीं महामंत्र सिद्धि प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
90. ॐ ह्रीं प्रभु सेवा प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
91. ॐ ह्रीं दोष रहित सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
92. ॐ ह्रीं मंगल वाणी प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
93. ॐ ह्रीं सर्व जीव प्रेम प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः

94. ॐ ह्रीं कर्म बंधन मुक्त कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
95. ॐ ह्रीं आत्म आनंद प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
96. ॐ ह्रीं मानसिक सुख प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
97. ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
98. ॐ ह्रीं चिंतित वस्तु प्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
99. ॐ ह्रीं परम् शांति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
100. ॐ ह्रीं इष्ट वस्तु प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
101. ॐ ह्रीं सत्य ज्ञान प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
102. ॐ ह्रीं जिनदेव भक्ति प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
103. ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
104. ॐ ह्रीं मनोहर रूप प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
105. ॐ ह्रीं तन मन स्वस्थ कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
106. ॐ ह्रीं कर्म शत्रु विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
107. ॐ ह्रीं मम कामना पूर्ण कराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः
108. ॐ ह्रीं सुखामृत प्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः

**जाप्य मंत्र**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः

(इति विधान सम्पूर्ण)

**रात देर से सोये, सुबह देर से जागे**
**जाना था बहुत दूर, इसलिये बहुत तेज भागे**
**इतनी तेज भागे, निकल गये मौत के आगे**
**थे बड़ भागे, बन गये अभागे।।**